2 अक्टूबर 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 13 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 3 सितम्बर से 12 सितम्बर तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

अजमेर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के अन्तर्गत दोनों जिनालयों में **पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन** द्वारा प्रात: नियमसार, ध्यान का स्वरूप एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त ब्र. मनोरमाबेन उज्जैन के प्रवचन भी हुये। प्रात: दशलक्षण मंडल विधान, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। विधि विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री बण्डा द्वारा स्थानीय लोगों के सहयोग से कराये गये। **- प्रकाशचंद पाण्ड्या**

न्यूजर्सी (अमेरिका) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर **पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर** द्वारा प्रात: दशलक्षण मंडल विधान के पश्चात् रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर प्रवचन तथा सायंकाल दशलक्षण धर्म व विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। रविवार को 170 तीर्थंकर मंडल विधान व सोलहकारण विधान भी हुए।

जयपुर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर सी-स्कीम स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में **पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ** द्वारा सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

चित्तौड़गढ (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर कुम्भा नगर स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में **पण्डित शीतलप्रसादजी पाण्डे उज्जैन** द्वारा दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

ठाकुरगंज (बिहार) : यहाँ पर्व के अवसर पर दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रात:काल दशलक्षण विधान हुआ। तत्पश्चात् दोपहर में **पण्डित नीशूजी शास्त्री** द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री नेमीनाथ दिगम्बर जैन नया मन्दिर ट्रस्ट एवं श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान नन्दीश्वर दिगम्बर जैन विद्यापीठ में **पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर** द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही दोपहर में पण्डित अनुरागजी शास्त्री ध्रुवधाम द्वारा गुणस्थान विषय पर कक्षा ली गई। इसके अतिरिक्त गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन भी हुये।

मुम्बई-विक्रोली : यहाँ पर्व के अवसर पर **डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जैन** (निदेशक-के.जे. सोमैया जैन अध्ययन केन्द्र) द्वारा गुणस्थान विषय पर व्याख्यानों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी के सी.डी. प्रवचन भी हुये।

सिद्धक्षेत्र गजपंथा-नासिक (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त **पण्डित प्रकाशचंदजी झांझरी उज्जैन एवं पण्डित हितेशभाई चौवटिया** द्वारा स्वाध्याय का लाभ मिला। प्रात: दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन पण्डित अनिलजी 'धवल' भोपाल एवं पण्डित शुभमजी शास्त्री गजपंथा द्वारा किया गया।

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री चन्द्रप्रभ जिनालय में प्रात:काल गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन के उपरांत **पण्डित अमनजी शास्त्री आरोन** द्वारा समयसार (47 शक्तियाँ) एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही **पण्डित अशोकजी शास्त्री चेन्नई** द्वारा दोपहर में छहढाला की कक्षा ली गई। दोपहर में इन्द्रध्वज विधान का भी आयोजन हुआ।

अकलूज-सोलापुर (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर वीतराग विज्ञान सोसायटी में प्रात: **पण्डित अंकुरजी शास्त्री खड़ैरी** द्वारा नियमसार, दोपहर में मोक्षमार्ग प्रकाशक की कक्षा एवं सायंकाल बालकक्षा का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त **पण्डित मिनियनजी शास्त्री भोपाल** द्वारा दोपहर में रत्नकरण्ड श्रावकाचार की कक्षा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुए।

सम्पादकीय –

भगवान महावीर के विश्वव्यापी संदेश

1

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

भगवान महावीर के संदेशों के अनुसार प्रत्येक आत्मा स्वभाव से परमात्मा है अर्थात् शक्तिरूप में सभी जीवों में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है, योग्यता है। अपने स्वरूप को या स्वभाव को जानने से, पहचानने से और उसी में जमने-रमने से, उसी का ध्यान करने से वह अव्यक्त स्वाभाविक परमात्म शक्ति पर्याय में प्रगट हो जाती है। यही आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया है।

जिस तरह मूर्तिकार पहले पत्थर में छुपी हुई (अव्यक्त) प्रतिमा को अपनी भेदक दृष्टि से, कल्पना शक्ति से देख लेता है, जान लेता है, पश्चात् उस कल्पना को पूर्ण विश्वास के साथ साकार रूप प्रदान कर देता है।

जिसतरह एक्स-रे मशीन हमारे शरीर के ऊपर पहने कपड़े, शरीर पर मड़े चमड़े और माँस-खून आदि के अन्दर छिपी टूटी हुई हड्डी का फोटोग्राफ ले लेती है; ठीक उसीप्रकार साधक जीव अपनी ज्ञान-किरणों से, शरीर का, द्रव्येन्द्रियों, भावेन्द्रियों एवं रागादि विकारीभावों का आत्मा से भेदज्ञान करके उसके अन्दर छिपे ज्ञानानन्द स्वभावी, सत् चित-आनन्दमय, अलख निरंजन भगवान आत्मा का दर्शन कर लेता है, आत्मा का अनुभव कर लेता है।

पुराण कहते हैं कि यही भेद-विज्ञान और आत्मानुभूति का काम भगवान महावीर के जीव ने अपनी दस भव पूर्व शेर की पर्याय में आकाशमार्ग से आये दो मुनिराजों के सम्बोधन से प्रारंभ किया था और दस भव बाद महावीर की पर्याय में उस मुक्तिमार्ग की प्रक्रिया को पूरा कर वे परमात्मा बन गये।

महावीर भी जन्म से भगवान नहीं थे। उन्होंने ३० वर्ष की उम्र से ४२ वर्ष की उम्र तक १२ वर्षों की अपूर्व आत्मसाधना से परमात्म दशा प्राप्त की थी।

वर्तमान चौबीसी के अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर के जीवनदर्शन को जब हम महावीर पुराण के आलोक में देखते हैं तो हमें उनसे प्रेरणा मिलती है कि जब एक पूँछवाला पशु साधारण आत्मा से परमात्मा बन सकता है, तो हम तो मूछवाले मानव हैं, हम अपना कल्याण क्यों नहीं कर सकते, हम नर से नारायण क्यों नहीं बन सकते?

भगवान महावीर के संदेश न केवल विश्वव्यापी हैं, वे सार्वजनिक एवं सार्वकालिक भी हैं। भगवान महावीर के संदेशों को हम यदि संक्षेप में कहें तो विचारों में अनेकान्त, वाणी में स्याद्वाद, आचरण में अहिंसा और व्यवहार में अपरिग्रह के रूप में व्यक्त कर सकते हैं। अनेकान्त और स्याद्वाद दार्शनिक (वस्तुपरक) सिद्धान्त है और अहिंसा व अपरिग्रह इन्हीं सिद्धान्तों का आचरणीय व्यावहारिक स्वरूप है। इसे ही संक्षेप में कहें तो वस्तुतः जैनदर्शन **वस्तुस्वभाव और स्वसंचालित वस्तुव्यवस्था** का ही दूसरा नाम है। इसे किसी तीर्थंकर विशेष ने बनाया नहीं है; बल्कि सभी तीर्थंकरों ने अपनी दिव्यध्वनि द्वारा, अपने दिव्य संदेशों द्वारा मात्र बताया है, प्रचारित किया है।

विश्व में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, ऐसा कोई काल नहीं जहाँ और जब सभी जीवों ने हिंसा झूठ, चोरी कुशील और परिग्रह को बुरा तथा अहिंसा, अपरिग्रह आदि को भला न माना हो। इसतरह महावीर के संदेशों का व्यावहारिक पहलु तो विश्वव्यापी है ही; सार्वजनिक है ही; सिद्धान्त भी अद्भुत है, अलौकिक है।

विश्व में मात्र छह द्रव्य हैं, जिनका एक नाम वस्तु है और छः कहें तो – १. जीवद्रव्य, २. पुद्गलद्रव्य, ३. धर्मद्रव्य, ४. अधर्मद्रव्य, ५. आकाशद्रव्य, ६. कालद्रव्य हैं। जीवद्रव्य अनन्त हैं, पुद्गलद्रव्य अनन्तानन्त हैं, धर्मद्रव्य, अधर्म व आकाशद्रव्य एक-एक हैं और कालाणु असंख्यात हैं।

ये सभी द्रव्य पूर्ण स्वतंत्र, स्वावलम्बी तथा नित्य परिणमनशील हैं। इनकी अपनी कार्य-कारण व्यवस्था स्व-चालित है। इनमें पाँच द्रव्य तो अचेतन हैं, उनमें सुख-दुःख, राग-द्वेष आदि नहीं होते। अतः इनकी यहाँ विशेष जानकारी आवश्यक नहीं है, संभव भी नहीं है। जीव एक

चेतन द्रव्य है, जो अनादिकाल से ही अपने स्वभाव से च्युत है और रागादिवश संयोगों में अटका है। इसप्रकार इसके राग-द्वेष (संयोगीभाव) होते रहते हैं। इन राग-द्वेष के विनाश से ही वीतरागता रूप धर्म प्रगट होता है।

आत्मा में अनन्त गुण हैं, अनन्त शक्तियाँ हैं एवं नित्य-अनित्य, एक-अनेक, भेद-अभेद आदि परस्पर विरोधी अनन्त धर्म हैं, इन्हीं धर्म, गुण या शक्तियों की पिण्ड रूप वस्तु को **अनेकान्त** कहते हैं। 'अनेकान्त' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - अनेक+अन्त। यहाँ अन्त का अर्थ धर्म होता है। इसप्रकार अनन्त धर्मात्मक या गुणात्मक वस्तु को ही **अनेकान्त** कहते हैं। वस्तु के अनन्त धर्मों को एकसाथ कहा नहीं जा सकता। इन्हीं धर्मों को मुख्य-गौण करके क्रम से एक के बाद एक का कथन करने, वाणी में व्यक्त करने को स्याद्वाद कहते हैं। स्यात्=सापेक्ष, वाद=कथन वस्तु के अनेक धर्मों को एकसाथ कहने की वाणी में सामर्थ्य नहीं होती, अतः मुख्य-गौण की व्यवस्था से एक को मुख्य रखकर कहना एवं शेष को गौण रखना ही स्याद्वाद है। **स्याद्वाद और अनेकान्त में वाचक-वाच्य सम्बन्ध है, प्रतिपादक-प्रतिपाद्य सम्बन्ध है।**

'जैनधर्म' किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या पंथ विशेष का नाम नहीं है; क्योंकि जैनधर्म का प्रतिपादन करनेवाले सभी - **चौबीसों तीर्थंकर क्षत्रिय थे, तीर्थंकर महावीर की दिव्यध्वनि को शास्त्र का स्वरूप देनेवाले उनके प्रमुख शिष्य गणधर ब्राह्मण थे और इसे धारण करनेवाले अधिकांश व्यक्ति वणिक हैं।** यह बात केवल भगवान महावीर के गणधर गौतम स्वामी के संदर्भ में ही लेना अन्य के नहीं; क्योंकि सभी तीर्थंकरों के गणधरों के ब्राह्मण ही थे - ऐसा नहीं है। अतः किसी व्यक्ति विशेष के कुछ सिद्धान्तों या मान्यताओं का नाम जैनधर्म नहीं है। इसे किसी तीर्थंकर विशेष ने बनाया नहीं है, मात्र बताया है।

वस्तुतः 'जैनधर्म' उस वस्तुस्वरूप का नाम है, जो अनादिकाल से है और अनन्तकाल तक रहेगा। जिसप्रकार अग्नि का स्वभाव उष्णता है, पानी का स्वभाव शीतलता है, उसीप्रकार आत्मा का स्वभाव ज्ञान है, क्षमा है, सरलता आदि है। अज्ञान, काम, क्रोध, मद, मोह, क्षोभ, हिंसा, असत्य आदि आत्मा का स्वभाव नहीं, विभाव है, विकारी भाव हैं; अतः ये अधर्म हैं। उत्तम क्षमा, हृदय की सरलता, सत्य, शौच, संयम, तप-त्याग-आकिंचन और अहिंसा आदि आत्मा के स्वभाव भाव हैं; अतः ये धर्म हैं।

आत्मा के उपर्युक्त स्वभाव और विभाव को जाने-पहचाने बिना उस स्वभाव की प्राप्ति और विभावों का अभाव होना संभव नहीं है। इस संदर्भ में महाकवि तुलसीदासजी का निम्नांकित कथन दृष्टव्य है - **''संग्रह-त्याग न बिनु पहचाने।''** कविवर दौलतरामजी भी यही कहते हैं - **''बिन जाने तें दोष गुनन को कैसे तजिए गहिए?''**

आत्मा के इस स्वभाव को जानना-पहचानना ही सम्यग्दर्शन है, सम्यग्ज्ञान है और यही मुक्ति का मार्ग है।

इस आत्मज्ञान के साथ वीतरागता एवं समताभाव प्राप्त करने के लिए स्व-संचालित विश्वव्यवस्था समझना भी अति आवश्यक है। इसके समझने से ही हमारा अन्तर्द्वन्द्व और बाहर का संघर्ष समाप्त हो सकता है। हम निश्चिंत और निर्भार होकर अन्तर आत्मा का ध्यान कर सकते हैं, जो हमें पुण्य-पापरूप कर्म बन्धन से मुक्त कराकर वीतराग धर्म की प्राप्ति करा सकता है; एतदर्थ भगवान महावीर की देशना का रहस्य जिनागम के अध्ययन से हम सब जानें इसी में हम सबका भला है। **(क्रमशः)**

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 22 सितम्बर को **जीव के स्वतत्त्व : पंचभाव** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता ब्र.विमलाबेन जबलपुर ने की एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती कमला भारिल्ल जयपुर उपस्थित थीं। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में दीपक जैन मजगुवां (उपाध्याय कनिष्ठ) तथा सिद्धांत शेट्टी उगार (शास्त्री तृतीयवर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण संयम जैन खैरागढ (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के विनम्र जैन बड़ागांव व अभय जैन देवराहा ने किया। आभार प्रदर्शन एवं ग्रंथ भेंट जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

आगामी कार्यक्रम...

महावीर भवन हिन्दवाड़ी, बेलगांव (कर्नाटक) में दिनांक 6 से 10 अक्टूबर तक धार्मिक शिक्षण शिविर लगने जा रहा है, अत: अधिक से अधिक संख्या में पधारकर लाभ लेवें।

पधारिये! अवश्य पधारिये!! !! श्री वीतरागाय नमः !! तत्वज्ञान का अपूर्व लाभ लीजिये!!

मंगल आमंत्रण

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

22वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 13 अक्टूबर 2019 से रविवार, दिनांक 20 अक्टूबर, 2019 तक

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी

भावभीना आमंत्रण

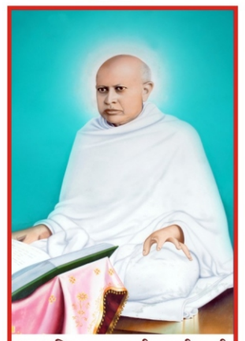

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होनेवाले आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की श्रृंखला का बाईसवाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष रविवार, दिनांक 13 अक्टूबर से रविवार, दिनांक 20 अक्टूबर, 2019 तक आयोजित होने जा रहा है। इसी अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा नवरचित श्री नियमसार महामंडल विधान भी संपन्न होगा।

इस शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के निर्देशन में अनेक विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों का गहराई से अध्ययन कराया जायेगा।

ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह

रविवार, दिनांक 13 अक्टूबर 2019, प्रात: 9:00 बजे

अध्यक्ष : श्री रमेशभाई शाह, अहमदाबाद (अध्यक्ष-वस्त्रापुर मंदिर)
ध्वजारोहणकर्त्ता : श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन, जयपुर
मंडप उद्घाटनकर्त्ता : श्री सेवन्तीभाई गांधी, अहमदाबाद
मंच उद्घाटनकर्त्ता : श्री शान्तिलालजी चौधरी, भीलवाड़ा
शिविर उद्घाटनकर्त्ता : श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
मुख्य अतिथि : श्री राजेशभाई जवेरी अहमदाबाद, श्री दिनेशजी तातेड़ जयपुर
विशिष्ट अतिथि : सर्वश्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, सेठ गुलाबचंदजी सागर, नरेशजी नागपुर, सुरेशजी पाटनी कोलकाता, आदीशजी जैन दिल्ली, प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, विशूभाई सूरत, अजितभाई नवरंगपुरा अहमदाबाद, सतीश अमृतभाई मेहता अहमदाबाद, प्रकाशभाई गम्भीरमलजी अहमदाबाद, ध्रुवेशभाई शास्त्री अहमदाबाद

गुरुदेवश्री के चित्र अनावरणकर्ता : श्री सुरेशभाई ए. शाह, अहमदाबाद
टोडरमलजी के चित्र अनावरणकर्ता : श्री ऋषभभाई शास्त्री, अहमदाबाद

दैनिक कार्यक्रम

प्रात:	5.00 से 5.30	सुप्रभात मंगलगायन
	5.30 से 6.15	प्रौढकक्षा
	6.30 से 7.00	डॉ.भारिल्लजी के प्रवचन (जिनवाणी चैनल)
	7.00 से 7.20	गुरुदेवश्री के प्रवचन (अरहंत चैनल)
	7.30 से 8.30	नित्य नियम पूजन एवं विधान
	9.00 से 9.30	सी.डी.प्रवचन (गुरुदेवश्री)
	9.30 से 10.30	प्रवचन : डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल
	10.40 से 11.20	विभिन्न कक्षायें - विशिष्ट विद्वानों द्वारा
दोपहर	1.45 से 5.15	विभिन्न कक्षायें - विशिष्ट विद्वानों द्वारा
सायं	6.30 से 7.15	विभिन्न कक्षायें - विशिष्ट विद्वानों द्वारा
	7.15 से 7.40	जिनेन्द्र भक्ति
	7.45 से 8.30	प्रथम प्रवचन - आमंत्रित विद्वानों द्वारा
	8.30 से 9.30	प्रवचन - ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना

विद्वान एवं उनके विषय

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर	तत्त्वचिन्तन
ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना	सामान्य श्रावकाचार
पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली	प्रवचनसार (ज्ञानाधिकार) एवं चार अभाव
डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, दिल्ली	जैन न्याय एवं सर्वज्ञ सिद्धि
डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर	गृहीत-अगृहीत मिथ्यात्व का स्वरूप एवं प्रमाण का प्रामाण्य
डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर	तीन लोक का स्वरूप एवं नैगमादि सप्त नय
डॉ. योगेशजी शास्त्री, अलीगंज	देवागम स्तोत्र एवं परीक्षामुख (परिच्छेद 1-2)
डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री, जयपुर	क्रमबद्धपर्याय एवं प्रमाण का विषय व फल
पण्डित पीयूषजी शास्त्री, जयपुर	सात तत्त्व का अन्यथा स्वरूप एवं व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि
पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, कोटा	मंगलाष्टक/महावीराष्टक एवं देव-शास्त्र-गुरु
डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री, बांसवाड़ा	14 गुणस्थान एवं पंच भाव
पण्डित अच्युतकान्त शास्त्री, जयपुर	निमित्त-उपादान

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता • श्रीमती सुनीता-प्रेमचंद बजाज एवं सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज, कोटा • श्राविकारत्न स्व. श्रीमती कंचनदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री धर्मचंदजी दीवान सुपुत्र श्री विद्याप्रकाश-संजयकुमार-अजय छाबड़ा एवं समस्त दीवान परिवार सूरत (सीकर वाले)

शिविर के परम संरक्षक

- जयकुमार डॉ. विजयलक्ष्मी, डॉ. रैना जैन कोटा, विधा-ऋषभ खमेसरा टोरन्टो (कनाडा), भानुकुमार जैन एवं श्रीमती बादामबाई जैन कोटा
- श्रीमती वरजूबाई ध. प. स्व. श्री दलीचन्दजी जैन हथाया, मु.थाना, घाटकोपर
- श्री महावीर दि. जैन मंदिर चैरिटेबल ट्रस्ट, सैक्टर नं. 11, हिरणमगरी, उदयपुर
- श्री सोहनराज कान्तीलाल जयन्तिलाल पुत्र श्री तखतराजजी परिवार, कोलकाता
- श्रीमती कमलाबाई ध. प. श्री नेमीचन्दजी पाण्डया (गोहाटीवाले), कलकत्ता
- श्रीमती बसन्तीबेन धर्मपत्नी स्व. श्री हरकचंदजी छाबड़ा सुपुत्र जुगलकिशोर, कपूरचंद, कैलाशचन्द, अशोककुमारजी छाबड़ा (सीकर वाले), मुम्बई -सूरत
- स्व. श्रीमती मानकुंवरबाई ध.प. श्री माधोसिंहजी की स्मृति में सुपुत्र श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी जैन, जयपुर
- स्व. श्री मदनलालजी कालिका सीकरवालों की पावन स्मृति में उनके सुपुत्र श्री भागचन्दजी सुपौत्र श्री भावेश व मनीष कालिका (छाबड़ा), उदयपुर
- श्रीमती कुसुम चौधरी ध. प. श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी, किशनगढ़
- श्रीमती राजकुमारी ध. प. श्री महावीरप्रसादजी सरावगी, कलकत्ता
- श्री अजितकुमारजी तोतूका सन्नी-गौरव फैमिली चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर
- श्रीमती सुन्दरबाई ध. प. श्री लखमीचन्दजी जैन (सागरवाले), जयपुर
- श्रीमती सुशीलादेवी ध. प. श्री शांतिलालजी जैन (अलवरवाले), जयपुर
- श्रीमती फूलदेवी ध. प. स्व. श्री लादूलालजी पहाड़िया, किशनगढ
- स्व. श्रीमती शकुन्तलादेवी की पुण्य स्मृति में श्री जवाहरलालजी जैन, जयपुर
- श्रीमती कंचनदेवी ध.प. श्री चिरंजीलालजी कासलीवाल, सेठी कॉलोनी, जयपुर
- श्रीमती प्रेमलता सेठिया ध.प. श्री अभयकरणजी सेठिया, सरदारशहर
- श्री प्रमोदकुमार आलोककुमारजी जैन, जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर
- श्री विमलकुमारजी जैन, नीरू केपीकल्स, विवेकविहार, दिल्ली
- श्रीमती मनोरमादेवी ध. प. श्री नेमीचन्दजी पहाड़िया, पीसांगन
- श्रीमती निर्मला ध.प. श्री सूरजमलजी हूमण, रामगंजमंडी
- श्रीमती ज्योति डॉ.अरुण दोडल हिंगोलीवाले घाटकोपर, मुम्बई
- श्री गम्भीरमलप्रकाशचन्दजी जैन सेमारीवाले, अहमदाबाद
- श्री अशोककुमारजी जैन अरिहंत कैपिटल प्रा.लि., इन्दौर
- श्री मगनमल सौभागमल पाटनी चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई
- श्री भंवरलालजी मोतीलालजी भोरावत, मुम्बई
- श्री नरेशकुमार हरीशकुमार जैन, अहमदाबाद
- मातुश्री देवकीबेन लवजीभाई गाला, मुम्बई
- श्री भगवानजी भाई कचराभाई शाह, लन्दन
- अहिंसा चैरिटेबल ट्रस्ट, सांताक्रूज, मुम्बई
- श्री गम्भीरमलजी जैन, विज्ञाननगर, कोटा
- श्रीमती अनिला शरदभाई शाह, यू.एस.ए.
- श्री भंवरलालजी लिखमावत, भिण्डर
- श्री निशिकांतजी जैन, औरंगाबाद

शिविर के संरक्षक

- श्री दि. जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट पंचबालयति दि. जैन मंदिर, साधनानगर, इन्दौर
- श्रीमती कंचनदेवी ध. प. जुगराजजी कासलीवाल, कोलकाता
- श्री मांगीलालजी चम्पालालजी रांटिया थाणावाले, मुम्बई
- श्रीमती बसंतीबाई छींटरमलजी बाकलीवाल, पीसांगन
- श्री पन्नालालजी शान्तिलालजी कुरावलीवाले, मुम्बई
- श्री देवीलालजी कस्तूरमलजी कुरावलीवाले, मुम्बई
- श्री जेठमलजी लादूलालजी अजमेरा, भीलवाड़ा • श्री नेमीचंदजी अजमेरा, बेगूं

शिविर के परम सहायक

1. श्रीमती मंजुलाबेन कविनचन्द परीख, मुम्बई
2. कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट (झई द्वीप जिनायतन) इन्दौर

शिविर के शिरोमणी संरक्षक

श्रीमान् प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

विधान के आमंत्रणकर्त्ता

• श्रीमती शकुन्तला ध.प.डॉ.के.एल. जैन एवं पुत्र-पुत्रवधु विक्रान्त-रेशू जैन, जयपुर

नोट :- शिविर के सभी प्रवचनों व कक्षाओं का live प्रसारण youtube के ptst चैनल पर होगा। देखने के लिये link है - www.youtube.com/user/todarmalsmaraktrust

निवेदक :

सुशीलकुमार गोदिका (अध्यक्ष) डॉ. हुकमचंद भारिल्ल (महामंत्री)
एवं समस्त ट्रस्टीगण, पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट

नोट : (1) शिविर में पधारने वाले सभी शिविरार्थीयों के लिए आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था रहेगी, आपके यहाँ से कितने व कौन -कौन भाई बहिन पधार रहे हैं - इसकी सूचना अवश्य देवें ताकि समुचित व्यवस्था की जा सके। (2) रिक्शेवाले को बताने का पता : श्री टोडरमल स्मारक भवन, त्रिमूर्ति जैन मंदिर, कानोडिया कॉलेज के पीछे, ए-4, बापू नगर, महात्मागाँधी रोड, जयपुर (3) कार्यक्रम स्थल एवं सम्पर्क सूत्र : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015, फोन : 2705581, 2707458 (4) मुम्बई -जयपुर सुपर फास्ट, भोपाल-जोधपुर पैसेंजर, इन्दौर-जयपुर सुपरफास्ट, इन्दौर-जोधपुर इन्टरसिटी, जबलपुर अजमेर सुपरफास्ट (दयोदय) आदि ट्रेने दुर्गापुरा स्टेशन पर रुकती हैं; इनसे आने वाले यात्री यहीं उतरें एवं ग्वालियर-उदयपुर इंटरसिटी गांधीनगर स्टेशन पर रुकती है, इससे आने वाले यात्री यहीं उतरें।

कृपया आमंत्रण पत्रिका को मंदिरजी या सब देख सकें ऐसे सार्वजनिक स्थान पर अवश्य लगा देवें।

आखिर हम करें क्या?

6

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अभी हम यहाँ उस परमध्यान की बात कर रहे हैं कि जिसमें न कुछ चेष्टा करनी है, न कुछ बोलना है और न कुछ सोचना है।

उक्त परमध्यान में जाने के लिये, उसे प्राप्त करने के लिये; उसके पहले आध्यात्मिक शास्त्रों का गहराई से अध्ययन, आत्मज्ञानीगुरु की वाणी का अत्यन्त रुचिपूर्वक श्रवण आवश्यक है।

आत्मा संबंधी जो जानकारी शास्त्रों के अध्ययन, ज्ञानियों के सत्समागम से प्राप्त हुई है; उसे तर्क की कसौटी पर कसकर, परखकर स्वीकार करना आवश्यक है।

इसके बिना तो हमें यह भी पता नहीं चलेगा कि हम जिस आत्मा को जानना चाहते हैं, निजरूप जानना चाहते हैं, जिसमें अपनापन स्थापित करना चाहते हैं, जिसका ध्यान करना चाहते हैं, अनुभव करना चाहते हैं; वह आत्मा कैसा है, क्या है, कहाँ है?

तात्पर्य यह है कि सबसे पहले तो हमें देव-शास्त्र-गुरु के माध्यम से तत्वार्थों का स्वरूप समझना है; देव-शास्त्र-गुरु का स्वरूप समझना है और दृष्टि के विषयभूत अपने उस भगवान आत्मा का स्वरूप समझना है, जिसमें अपनापन स्थापित होने का नाम सम्यग्दर्शन, जिसे निजरूप जानने का नाम सम्यग्ज्ञान है और जिसमें जमने-रमने का नाम ध्यान है, चारित्र है।

यदि यह सब करना है तो फिर आप यह क्यों कहते हैं कि न कुछ करो, न बोलो और न सोचो?

अरे भाई! यह बात तो उस परमध्यान के समय की बात है; जिसकी यहाँ मुख्यरूप से चर्चा चल रही है। जिसके बारे में कहा गया है कि -

(रेखता)

स्वयं को जानो, जानो नहीं जानना होने दो तुम सहज।
जानने का तनाव मत करो जानते रहो निरन्तर सहज।।
अरे करने-धरने का बोझ उतारो हो जावो तुम सहज।
जानने के तनाव से रहित जानना होने दो तुम सहज।। ७।।

बनारसीदासजी कहते हैं -

कहे बनारसी सहज का धंधा वाद-विवाद करे सो अंधा।
खोजी जीवे वादी मरे ऐसी साँची कहवत है।।

जानने को; सोचने, बोलने और करने से अलग करके तो देखो। अभी तक हम जानने-देखने का व्यापार (कार्य) सोचने, बोलने और करने के साथ करते रहे हैं; एक बार सोचने, बोलने और करने से रहित मात्र जानकर तो देखो, ज्ञान के व्यापार को सहज तो होने दो।

यहाँ कोई कहता है कि हम क्या जानें और क्या नहीं जानें - इसका निर्णय तो विवेकपूर्वक करना ही होगा।

उससे कहते हैं कि नहीं करना है; क्योंकि ज्ञान की प्रत्येक पर्याय किस ज्ञेय को जाने - इस योग्यता से सम्पन्न होती है।

तीन काल के जितने समय हैं, प्रत्येक जीव के ज्ञानगुण की उतनी ही पर्यायें होती हैं। अनादिकाल से ही यह सुनिश्चित है कि कौन सी पर्याय किस ज्ञेय को जानेगी। इसका निर्णय आपको नहीं करना है; इसका बोझा भी अपने माथे पर नहीं रखना है, इसे भी उतार कर फेंकना है।

यद्यपि वह जानना आपका परिणमन है; अतः **यः परिणमति सः कर्त्ता** - जो परिणमित होता है, वह उस परिणमन का कर्त्ता है। इस नियम के अनुसार आप ही उक्त परिणमन के कर्त्ता हैं; तथापि उस परिणमन में आपको कुछ करने का विकल्प नहीं करना है; कुछ सोचना नहीं है, कुछ बोलना नहीं है, कुछ करना भी नहीं है।

तात्पर्य यह है कि सोचने, बोलने और करने का विकल्प नहीं करना है; अपने माथे पर कुछ बोझ नहीं रखना है, तनाव नहीं रखना है, एकदम सहज रहना है। सहज भाव से जानने-देखते रहना है, फेरफार करने का विकल्प नहीं करना है, सहजभाव से ज्ञाता-दृष्टा बने रहना है।

इसी का नाम ध्यान है, धर्म है, वीतरागभाव है, सम्यग्ज्ञान है, सम्यग्दर्शन है, सम्यक्चारित्र है, मुक्ति का मार्ग है।

इसमें जीव को कुछ करना नहीं लगता है, जबकि यही सब-कुछ है। पीछे जितने नाम गिनाये हैं, वे सब इसी के नाम हैं। यही असली धर्म है।

जिसप्रकार एक डॉक्टर ऑपरेशन करते समय अपने उपयोग को पूरी तरह मरीज पर ही केन्द्रित रखता है; यहाँ-वहाँ नहीं देखता, अन्य कोई काम नहीं करता, किसी से बात नहीं करता, अन्य विषयों के बारे में सोचता भी नहीं है।

यदि वह बहुत गंभीर ऑपरेशन कर रहा है। तो उस समय उसके पुत्र के मरण का समाचार भी उसे नहीं दिया जाता।

वह भी यही चाहता है कि उसे किसी भी रूप में डिस्टर्ब न किया जाय। यदि ऐसा किया जाता है तो वह अपने काम को सफलतापूर्वक सम्पन्न नहीं कर पावेगा।

ऐसे ही जब हम आत्मध्यान का काम कर रहे हों; तब हम भी कुछ करने, बोलने और सोचने का विकल्प न करें; अन्यथा हम आत्मध्यान के कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न नहीं कर पावेंगे। आत्मध्यान की, शुद्धोपयोग की, आत्मानुभूति की यही स्थिति है।

जिसप्रकार सिद्धभगवान कुछ नहीं करते, सहज ज्ञाता-दृष्टा ही बने रहते हैं; सबकुछ जानते रहते हैं, देखते रहते हैं, अनन्त अतीन्द्रिय आनन्द का उपभोग करते रहते हैं, एकदम सहज शान्त बने रहते हैं।

उसीप्रकार सभी ज्ञानी आत्मा भी आत्मध्यान के काल में, अनुभूति के काल में कुछ नहीं करते, सहज ज्ञाता-दृष्टा बने रहते हैं, सब कुछ जानते-देखते रहते हैं, अतीन्द्रिय आनन्द का उपयोग करते रहते हैं, एकदम सहज शान्त बने रहते हैं।

यही ध्यान है, यही धर्म है; इसी से अरहंत-सिद्ध पद की प्राप्ति होती है। यही एकमात्र कर्त्तव्य है, परम कर्त्तव्य है। यदि हमें अरहन्त सिद्ध पद की प्राप्ति करना है तो फिर जैसे सहज वे रहते हैं, हमें भी वैसे ही सहज रहने का अभ्यास होना चाहिये। ये करने-धरने के तनाव को लेकर हम शान्त नहीं रह सकते।

किस समय की कौनसी ज्ञानपर्याय किसको जाने, कब जाने - इसका नियामक कौन है?

उक्त सन्दर्भ में बौद्धों का कहना यह है कि जो ज्ञेय सामने होगा, ज्ञानपर्याय सहज से ही उसे ही जान लेगी; इसप्रकार उनका कहना यह है कि ज्ञेय ही ज्ञान का नियामक है, ज्ञेय से ही ज्ञान की उत्पत्ति होती, ज्ञेयों को ही ज्ञान जानता है और ज्ञान ज्ञेयाकार ही होता है।

उनके इस सिद्धान्त को तदुत्पत्ति, तदाकार और तदध्यवसाय का सिद्धान्त कहते हैं।

जैनाचार्यों का कहना यह है कि न तो ज्ञेयों से ज्ञान की उत्पत्ति होती है, न ज्ञान ज्ञेयाकार होता है और न ज्ञान ज्ञेयों को जानने वाला होता है।

ज्ञान स्वयं से ही उत्पन्न होता है, स्वयं की योग्यता से ही उत्पन्न होता है; ज्ञान ज्ञानाकार ही होता है और ज्ञान ज्ञान को ही जाननेवाला होता। ज्ञेय भी अपनी योग्यता से, प्रमेयत्व गुण से ज्ञान के ज्ञेय बनते हैं। ज्ञान में जो ज्ञेयों का आकार दिखाई देता है, वह ज्ञेयों जैसा आकार ज्ञान से ही बना हुआ आकार है। उसमें ज्ञान का ही कच्चा मेटेरियल लगा हुआ है। ज्ञान ने स्वयं से स्वयं में उसका निर्माण किया है। ज्ञान अपनी ज्ञान पर्याय को जानते हैं और उसमें ज्ञेय झलकते हैं।

तात्पर्य यह है कि ज्ञान किस ज्ञेय को जाने - इस बात की योग्यता ज्ञान में अनादि-अनन्त है। इसलिये हमारे माथे पर यह बोझ भी नहीं है कि मैं यह निर्णय करूँ कि मैं किसे जानूँ और किसे नहीं जानूँ।

इसप्रकार यदि हम चाहे कुछ भी, अच्छा-बुरा जानते रहेंगे तो फिर हमें तदनुसार बंध भी होगा?

हाँ, यह बात तो है, पर हम चाहे कुछ भी, चाहे जैसा अच्छा-बुरा क्यों जानते रहेंगे? हम तो वही जानेंगे कि जो उस समय हमारे ज्ञान का ज्ञेय बनना सुनिश्चित होगा, हमारे ज्ञान का ज्ञेय बनना होगा।

जब हमने यह निर्णय कर ही लिया है कि ज्ञान की प्रत्येक पर्याय का ज्ञेय सुनिश्चित है तो फिर हम चाहे जो कुछ क्यों जानेंगे? जो हमारी ज्ञानपर्याय में जानना सुनिश्चित होगा, वही जानेंगे।

हमने ऐसा स्पष्ट अनुभव किया है कि हमारे सामने कोई बैठा है, हम उससे बात भी कर रहे हैं; फिर भी कभी-कभी ऐसा होता है कि हमारे ज्ञान का ज्ञेय वह नहीं बनता और मुम्बई बैठा हमारा बेटा हमारे ज्ञान का ज्ञेय बन जाता है। **(क्रमशः)**

ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर हेतु -

आवास आरक्षण शीघ्र करें

दिनांक 1 से 3 नवम्बर तक ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर (म.प्र.) में होने वाले वेदी शिलान्यास महोत्सव हेतु www.dhaidweep.com पर जाकर आवास हेतु ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन अवश्य करें। **संपर्क-** 9584372443 (अशोक शास्त्री), 9893304432 (आवास विभाग)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड के अन्तर्गत –

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ

व्यक्तित्व विकास में आध्यात्मिक शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय आध्यात्मिक शिक्षा को समर्पित एक अनूठा संस्थान है। समाज के विभिन्न वर्गों के सदस्य इस महाविद्यालय में संचालित शिक्षा का लाभ लेना चाहते हैं, किन्तु वे अनेक विवशताओं के कारण नियमित छात्र के रूप में अध्ययन नहीं कर पाते हैं। अतः क्षेत्र व काल की बाधा को दूर कर जैन तत्त्वज्ञान को आधिकारिक रूप से जन-जन तक पहुँचाने के लिए मुक्त विश्वविद्यालयों की तर्ज पर **श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ** की स्थापना की गई है।

विश्वविद्यालयों में निर्धारित जैनदर्शन विषय सहित शास्त्री की शिक्षा प्राप्त करने हेतु लौकिक शिक्षा के अन्तर्गत संस्कृत और कला संकाय के पारंपरिक विषयों का अध्ययन करना भी अनिवार्य होता है, अतः जिज्ञासु होने पर भी खासकर महिला वर्ग व्यवस्था के अभाव में इसप्रकार के अध्ययन से वंचित रह जाता है। यह मुक्त विद्यापीठ इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए समर्पित और संस्कृत आदि की अनिवार्यता के बिना किसी भी जाति, उम्र, वर्ग के लिए जैनतत्त्व विद्या के प्रचार-प्रसार हेतु कटिबद्ध है। इस विद्यापीठ द्वारा जैनधर्म के सम्पूर्ण अध्ययन को ध्यान में रखते हुए अनेक पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।

वीतराग विज्ञान पाठमाला से समयसार तक का घर बैठे नियमित एवं व्यवस्थित स्वाध्याय का सुनहरा अवसर

पाठ्यक्रम – (1) द्विवर्षीय विशारद परीक्षा (4 सेमेस्टर)
(2) त्रिवर्षीय सिद्धान्त विशारद परीक्षा (6 सेमेस्टर)

प्रवेश प्रक्रिया - 1. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की वेबसाइट **www.ptst.in** को **visit** करें। 2. **Education** पोर्टल में श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के अन्तर्गत **Online Apply** पर क्लिक करके फार्म को पूरा भरकर **Submit** करें। 3. कृपया स्क्रीन पर दिखाई दे रही सूचना को प्रिंट कर लें या फिर अपना फार्म नं. जरूर लिख लेवें। 4. **Pay Now** बटन पर क्लिक कर अपनी फीस को ऑनलाईन जमा करें। 5. कृपया पेमेन्ट सफल होते ही मोबाइल नं. 7742364541 (नीशू शास्त्री) पर कॉल या वॉट्सएप द्वारा सूचना अवश्य देवें।

नोट :- ऑफ लाइन रजिस्ट्रेशन भी करवा सकते हैं।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

13 से 20 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
25 से 29 अक्टूबर	देवलाली	दीपावली
1 से 3 नवम्बर	इन्दौर (ढाईद्वीप)	वेदी शिलान्यास
4 से 11 नवम्बर	कलकत्ता	अष्टाह्निका महापर्व

T.V. चैनल पर डॉ. संजीव गोधा

गुजरात के प्रसिद्ध GTPL के निर्माण न्यूज़ TV चैनल पर अन्तरराष्ट्रीय जैन विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर का क्षमावाणी के पावन प्रसंग पर एक 25 मिनट का इन्टरव्यू दिनांक 13 सितम्बर, 2019 को दो बार प्रसारित किया गया। इन्टरव्यू में एंकर नताशा बक्शी द्वारा पूछे गये लगभग 12-15 प्रश्नों के माध्यम से इस पर्व के महत्व एवं वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता को बहुत सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया।

देश के 18 प्रांतों में अनगिनत लोगों द्वारा देखे गये इस इन्टरव्यू को हजारों लोगों ने सराहा। अब इसे YouTube के Drsanjeevgodha Channel पर Play list में विशिष्ट प्रवचनों के अन्तर्गत देखा जा सकता है।

– चैतन्य शास्त्री, अहमदाबाद

हार्दिक बधाई!

जयपुर (राज.) : यहाँ बापूनगर स्थित राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में दिनांक 19 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत काव्यपाठ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान **अतिशय जैन चौरई** (शास्त्री द्वितीयवर्ष) व द्वितीय स्थान **समकित जैन ईसागढ** (शास्त्री प्रथमवर्ष) एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता (पक्ष) में प्रथम स्थान **संयम जैन तिगौड़ा** (शास्त्री द्वितीयवर्ष) तथा विपक्ष में प्रथम स्थान **आत्मअनुशीलन जैन दमोह** (शास्त्री द्वितीयवर्ष) ने प्राप्त किया।

इस उपलब्धि हेतु टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

प्रकाशन तिथि : 28 सितम्बर 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com